₹ शिव भगवानुवाच

मृदुभाषी भव:

मीठे बच्चे! मधुरता के गुण को धारण करने वाला यहाँ भी महान बनता है और स्वर्ग में अमरत्व को पाता है। जिसकी वाणी मधुर हैं उसे सभी महान रूप से देखते हैं। अत: यह मधुरता का विशेष गुण हर बच्चे में होना चाहिए। मधुर बोल से ही मधुसूदन का नाम बाला होगा। मधुरता की मधु जिसके साथ हैं, उन्हें हर कार्य में सफलता ही सफलता है। यदि जीवन में मधुरता का गुण है, तो हर बोल मोती के समान होंगे। ऐसे लगेगा, जैसे-बोल नहीं रहे हैं, मोतियों की वर्षा हो रही है। ऐसे मधुर बोलों के प्रकम्पन सर्व को स्वत: ही खींचते हैं। जैसे परमपिता परमात्मा के स्वभाव सदा हर आत्मा के प्रति कल्याण और रहम की भावना का है। हर आत्मा को मधुरता और निर्माणता से ऊँचे उठाने का है। ऐसे ही अपना स्वभाव मीठा व विनम्र बनाओ। अगर तेज बोलने का या आवेश में आने का स्वभाव है, तो यह भी ब्राह्मण जीवन में बहुत बड़ा विघ्न है। इसलिए ऐसे गलत स्वभाव को परिवर्तन करो मीठा खाने और खिलाने से तो अल्पकाल के लिए मुख मीठा होता है और खुश होते हैं। परन्तु यदि स्वयं ही मीठा बन जाएँ, तो सदा ही मुख में मधुर रहेंगे। ऐसे मधुर बोल स्वयं को भी खुश करेंगे और दूसरों को भी खुश करेंगे। इसी विधि से सदा सर्व का मुख मीठा करते रहो। सदा मीठी दृष्टि, मीठी दृष्टि से अथवा बोल से सन्मुख आत्मा भरपूर हो जाती है। थोड़ी- सी भी मधुर दृष्टि उस आत्मा की दृष्टि हो बदल देंगी। मधुरता ऐसी धारणा है, जो कड़वी धरणी को भी मधुर बना देती है। हर आत्मा को बदलने का आधार मधुर बोल ही हैं। मीठे बच्चे! तुम मीठी शुद्ध आत्मा हो। इन दो मधुर बोलों ने तथा भगवान की मीठी दृष्टि ने लाखों का जीवन बदल दिया। ऐसी ही मधुरता द्वारा आप आत्माएँ औरों को भी मधुर बना सकते हो। आपकी मधुरता द्वारा ही लोगों को भगवान की समीपता का साक्षात्कार होगा। इसीलिए हे आत्माओं! शदा मृदुभाषी बनों।

ओम् शान्ति

- ब्रह्माकुमारीज् वार्ता फिचस

www.bkvarta.com